OBSERVATIONS BY THE CHAIR

श्री सभापति: माननीय सदस्यगण, अत्यंत दर्दनाक, पीड़ादायक, अमर्यादित आचरण को देखकर मैं दुखी हूँ। शासन 6 दशक के बाद तीसरे निरंतर लगातार काल में है। मैंने चर्चा की और मैंने अनुरोध किया कि प्रतिपक्ष के नेता को बिना रोक-टोक के बोलने दीजिए। मैंने उनको पूरा अवसर दिया। आज वे सदन छोड़कर नहीं गए हैं, मर्यादा छोड़कर गए हैं। आज उन्होंने मुझे पीठ नहीं दिखाई है, बल्कि भारतीय संविधान को पीठ दिखाई है। आज उन्होंने मेरा अनादर और आपका अनादर नहीं किया है, उस शपथ का अनादर किया है, जो संविधान के तहत ली है। भारत के संविधान की इससे बड़ी अपमानित बात नहीं हो सकती। ऐसा कैसे हो सकता है कि House of Elders, the Upper House, हमें देश का मार्गदर्शन करना है, मैं उनके आचरण की भर्त्सना करता हूँ। देश के 140 करोड़ लोग इससे आहत होंगे। सदन का मतलब है कि जब आपने अपनी पूरी बात कह दी, तो सत्ता पक्ष की बात सुनो।

माननीय सदस्यगण, आप सभी जानते हैं कि कल देर रात तक चर्चा की गई और हर सदस्य को मौका दिया गया। It is an occasion where they have challenged the Indian Constitution, they have outraged the spirit of the Indian Constitution, and they have disregarded the oath that they have taken. मैं इस कुर्सी पर बैठकर इतना दुखी हूँ कि भारत के संविधान का इतना बड़ा अपमान, इतना बड़ा मज़ाक! भारत का संविधान हाथ में रखने की किताब नहीं है, जीने की किताब है। मैं आशा करता हूँ कि वे आत्मचिंतन करेंगे, मंथन करेंगे, अपने दिल को टटोलेंगे और कर्तव्य पर आएंगे।

MOTION OF THANKS ON THE PRESIDENT'S ADDRESS- *Contd.*

श्री सभापति: माननीय प्रधान मंत्री जी, आप बोलिए।

श्री नरेन्द्र मोदी: आदरणीय सभापति जी, आपकी वेदना मैं समझ सकता हूँ। 140 करोड़ देशवासियों ने जो निर्णय दिया है, जो जनादेश दिया है, उसे ये पचा नहीं पा रहे हैं। कल उनकी सारी हरकतें फेल हो गईं और आज उनका वह लड़ाई लड़ने का भी हौसला नहीं था, इसलिए वे मैदान छोड़कर भाग गए हैं।

आदरणीय सभापति जी, मैं तो कर्तव्य से बंधा हुआ हूँ और यहाँ डिबेट में कोई स्कोर करने के लिए नहीं आया हूँ। मैं तो देश का सेवक हूँ, देशवासियों की तरह हिसाब देता हूँ, देश की जनता को अपने पल-पल का हिसाब देना अपना कर्तव्य मानता हूँ।

आदरणीय सभापति जी, वैश्विक परिस्थितियाँ ऐसी पैदा हुईं कि फर्टिलाइज़र के लिए बहुत बड़ा संकट पैदा हुआ। हमने देश के किसान को मुसीबत में नहीं आने दिया और करीब-करीब 12 लाख करोड़ रुपये की फर्टिलाइज़र में सब्सिडी दी है, जो भारत की आज़ादी के इतिहास में सर्वाधिक है। उसी का परिणाम है कि हमने हमारे किसान तक फर्टिलाइज़र का इतना बड़ा बोझ जाने नहीं दिया और सरकार ने उसको अपने कंधे पर उठा लिया है।